



SHRI MANGALA KANTA ROY

Shri Mangala Kanta Roy, famously known as 'Morag Dadu of North', producing unique bird calls, one of the oldest folk musicians, is widely recognized for his role in pioneering through musical instrument 'Sarinda'. He has taken folk music to another level that haunts others to think folk music in a new way.

2. Born on 1st January, 1921 at Gadhayar Kuthi in Dhupguri Block, Jalpaiguri District, West Bengal, Shri Roy got his primary education from Gadhayer Kuthi Primary School. At childhood, he lost his parents and took shelter at neighbor's house. Rather than study, he was enchanted with the musical instrument 'Sarinda'. He got inspiration from Tolmohan Roy, a ballad singer, who was playing with the 'Sarinda'. The tune touched his heart at once and he wanted to learn 'Sarinda' from him. He bought 'Sarinda' from him. Out of his profound love, Shri Roy has chosen 'Sarinda' music as his profession.

3. At the age of ninety, Shri Roy was called to Delhi in Pragati Maidan to show his performance. He won everyone's heart. Now a days we can still hardly find such musician like Shri Roy who is at the age of 102 still can produce such mesmerizing & performances to keep the 'Sarinda' music alive. He craves to teach the future performers who are interested in the 'Sarinda' so that the song of life can continue, irrespective of caste, culture and creed. His patience and tenacity, his devotion, ultimately his love for the 'Sarinda' music is enormous, with full of vitality. His 'Sarinda' tune makes everyone's mind indifferent to the world. He leads everyone to another world where only spiritual delight looms large without any 'din and bustle'.

4. Shri Roy received 'Bangaratna' award in the year 2017 from Chief Minister of West Bengal. On behalf of the State Government he won 'Shilpi Samman' award. Apart from these, he was invited by so many cultural institutions and given prestigious medals and awards.



श्री मंगला कान्त राय

श्री मंगला कान्त राय, 'मोराग दादू ऑफ नॉर्थ' के नाम से प्रसिद्ध हैं। वह पक्षियों की अनूठी आवाज निकालते हैं और सबसे पुराने लोक संगीतकारों में से हैं। उन्हें 'सरिंदा' वाद्ययंत्र को आगे बढ़ाने में उनकी भूमिका के लिए जाना जाता है। उन्होंने लोक संगीत को एक ऐसे स्तर पर पहुंचा दिया है जिससे दूसरे लोग लोक संगीत के बारे में नए नजरिए से सोचने पर विवश हो जाते हैं।

2. 1 जनवरी, 1921 में पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले के धुपगुड़ी ब्लॉक के गढ्यार कुथी में जन्मे, श्री राय ने अपनी प्राथमिक शिक्षा गढ्यार कुथी प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त की। बचपन में, उन्होंने अपने माता-पिता को खो दिया और वह पड़ोसी के घर में रहने लगे। अध्ययन की बजाय, उन्हें संगीत वाद्ययंत्र 'सरिंदा' से प्यार था। उन्हें "सरिंदा" वादक लोकगाथा गायक तोलमोहन राय से प्रेरणा मिली। "सरिंदा" के स्वर ने तुरंत उनके दिल को छू लिया और उनके मन में सरिंदा सीखने की ललक पैदा हुई। उन्होंने उनसे 'सरिंदा' खरीद लिया। गहरे लगाव के कारण श्री राय ने सरिंदा संगीत को अपने पेशे के रूप में चुना है।

3. नब्बे साल की उम्र में अपनी कला प्रदर्शन के लिए श्री राय को दिल्ली के प्रगति मैदान बुलाया गया था। उन्होंने सभी का दिल जीत लिया। आज शायद ही हमें श्री राय जैसे संगीतकार मिल पाएंगे जो 102 वर्ष की आयु में सरिंदा संगीत को जीवित रखने के लिए इस तरह मनमोहक प्रदर्शन कर सकते हैं। वह 'सरिंदा' में रुचि रखने वाले भावी कलाकारों को सिखाने की तड़प रखते हैं ताकि जाति, संस्कृति और पंथ से इतर जीवन का गीत जारी रहे। उनका धैर्य और लगन, उनकी निष्ठा और सबसे बढ़कर सरिंदा संगीत के प्रति उनका प्रेम असीम और जीवंतता से भरपूर है। उनकी सरिंदा धुन हर किसी का ध्यान दुनिया से हटाकर अपनी ओर खींच लेती है। वह हर सुनने वाले व्यक्ति को ऐसे लोक में ले जाती है, जहां कोई 'शोर और तनाव' नहीं, केवल अलौकिक आनंद का साम्राज्य होता है।

4. श्री राय को वर्ष 2017 में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री से 'बंगरत्न' पुरस्कार प्राप्त हुआ। राज्य सरकार की ओर से उन्होंने 'शिल्पी सम्मान' पुरस्कार अर्जित किया। इनके अलावा, उन्हें कई सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा आमंत्रित किया गया था और प्रतिष्ठित पदक और पुरस्कार प्रदान किए गए।